‘अधिकार विकास एवं संघर्ष – एक अध्ययन’ क्रिया द्वारा संचालित महिला कार्यकर्ताओं के लिए एक सप्ताह का आवासीय अध्ययन कार्यक्रम है। इस प्रशिक्षण के दौरान मानव अधिकार तंत्रों तथा दृष्टिकोणों का निरीक्षण किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक आंदोलनों, विकास के मुद्दों तथा अधिकार पर जोर देते हुए सिद्धांतों तथा वास्तविकताओं के बीच की कड़ी को खोजना है।

22–26 नवंबर, 2010
मानेसर, हरियाणा

पाठ्यक्रम

विकास के लिए अधिकार आधारित दृष्टिकोण ने समूचे भारत में विकास कार्यकर्ताओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच विश्वास और साख बना ली है। परंतु इस दृष्टिकोण की उपयोगिता या विश्वसनीयता की समालोचना और स्पष्टता की आवश्यकता अभी भी शेष है।

अधिकांश विकास कार्यकर्ताओं के लिए अभी भी अधिकार आधारित दृष्टिकोण से कार्य करना कठिन है क्योंकि वे इससे पूरी तरह परिचित नहीं हैं। इस पर हुए अधिकांश पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा में किए गए हैं जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी भाषी वर्ग इससे अपरिचित रह गया है। यह प्रशिक्षण इसी कमी को दूर करने का एक प्रयास है।

इस पाठ्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार प्रक्रिया और संधियों की व्यवहारिक उपयोगिता तथा कार्यान्वयन को सूक्ष्मता से देखने की कोशिश की जाएगी। भारत में प्रचलित विभिन्न प्रकार के हुए मामलों के अध्ययन द्वारा प्रतिभागी अधिकार आधारित दृष्टिकोण की उपयोगिता एवं प्रभाव का मूल्यांकन करेंगे। इस पाठ्यक्रम को संचालित करने वाले समूह में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न मुद्दों पर कार्य करने वाले अनुभवी व्यक्ति शामिल होंगे जो ना सिर्फ इन मुद्दों पर कार्य करते हैं बल्कि जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इन मुद्दों को उजागर भी किया है। इस पाठ्यक्रम में सभी कार्यक्रम हिन्दी में होंगे जिसमें पढ़ाई, लिखाई, चर्चा, फिल्में आदि शामिल हैं। विभिन्न आंदोलनों व उनके प्रभावों को समझने के लिए वास्तविक केस स्टडीज़ का प्रयोग किया जाएगा। अतः प्रतिभागियों से अपेक्षा की जाती है कि वे हिन्दी भाषा से भलीभाँति परिचित हों और उसे लिखना पढ़ना जानते हों, क्योंकि इसमें पढ़ने के लिए हिन्दी में सामग्री भी दी जाएगी।

विषय वस्तु :

भारत के परिप्रेक्ष्य में अधिकार
अधिकार, जेंडर तथा स्वास्थ्य की परस्परता
दलित अधिकार
अधिकार एवं यौनिकता के मुद्दे
सांप्रदायिकता के मुद्दे
एच.आई.वी/एड्स एवं अधिकार के मुद्दे
अधिकार, विकास एवं आंदोलन
सूचना का अधिकार
स्वास्थ्य का अधिकार

आयोजक:

क्रिया – दिल्ली में कार्यरत एक गैर सरकारी संस्था है जो महिला मानव अधिकारों के मुद्दे पर कार्य करती है। क्रिया महिलाओं को उनके अधिकारों की जानकारी देकर उन्हें अपने अधिकारों की मांग करने के लिए प्रोत्साहित करती है। अपने विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा क्रिया महिलाओं के नेतृत्व विकास, यौनिकता, महिलाओं के प्रति हिंसा तथा अधिकारों पर उनकी क्षमता बढ़ाने का प्रयास कर रही है।

प्रतिभागी:

इस पाठ्यक्रम के लिए वे सभी महिलायें आवेदन कर सकती हैं जो विकास के मुद्दों तथा मानव अधिकार के संदर्भ में महिलाओं के साथ कार्य कर रही हैं। आवेदन प्राप्त करने के बाद कुल 25 प्रतिभागियों का इस पाठ्यक्रम के लिए चुनाव किया जाएगा। सभी प्रतिभागियों से अपेक्षा की जाती है कि पूरे पाठ्यक्रम के लिए वे आरंभ से अंत तक कार्यक्रम स्थल पर निवास करेंगे।

स्थान एवं शुल्क/व्यय:

‘अधिकार, विकास एवं संघर्ष – एक अध्ययन’ का आयोजन मानेसर, हरियाणा में किया जा रहा है। क्रिया सभी सहभागियों के रहने, भोजन व यात्रा का व्यय वहन करेगी। इस पाठ्यक्रम के आयोजन में सहयोग के लिए क्रिया, ऑक्सफेम इंडिया व फोर्ड फाउंडेशन का धन्यवाद करती है।

शिक्षकगण:

शालिनी सिंह – सामाजिक विज्ञान की पृष्ठभूमि के साथ शालिनी एक वकील व प्रशिक्षित काउन्सलर हैं। महिला मुद्दों के क्षेत्र में बारह साल से कार्य करते हुए पिछले चार साल से क्रिया, अंतर्राष्ट्रीय महिला मानव अधिकार संस्था के समुदाय आधारित कार्यक्रम से जुड़कर शालिनी महिला हिंसा, जेन्डर, यौनिकता तथा महिलाओं से जुड़े कानून के मुद्दों पर प्रशिक्षण देने व लिखने का कार्य करती हैं। इसके पहले इन्होंने साक्षी और ह्यूमन राईट्स लॉ नेटवर्क के साथ जुड़कर महिला हिंसा पर प्रशिक्षक व परामर्शदाता के रूप में सक्रिय रूप से कार्य किया है।

एस. विनीता – एस विनीता ने चिकित्सीय और मानसिक सामाजिक कार्यो में गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया था लेकिन अब उन्होंने मानवाधिकार विषयों पर सक्रिय रूप से काम करने का निर्णय लिया है। वर्तमान में विनिता भारत के नई दिल्ली में क्रिया नामक एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के गैर-सरकारी संगठन में कार्यरत हैं और यौनिकता, जेंडर और अधिकार विषयों पर हिन्दी में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विकास करने की दिशा में कर रही हैं। क्रिया के 'समुदाय आधारित, नेतृत्व कार्यक्रम' के अंतर्गत उनका प्रमुख दायित्व महिला अधिकारों के लिए काम करने वाले संगठनों में नारीवादी नेतृत्व का विकास करना है। विनिता यह जानने में उत्सुक रहती हैं कि किस तरह महिलाओं को सशक्त करने या उनके साथ भेदभाव को जारी रखने के लिए भाषा को प्रयोग किया जाता रहा है।

प्रमदा मेनन – एक क्वीयर नारीवादी कार्यकर्ता और स्वतंत्र सलाहकार के रूप में कार्य करती हैं। प्रमदा मेनन ने पिछले दो दशकों से भी ज्यादा समय से यौनिकता, यौन अधिकार, जेन्डर, महिलाओं के प्रति हिंसा, संस्थागत विकास और बदलाव और जीविका के मुद्दों पर कार्य कर रही हैं। ये क्रिया की सह संस्थापक हैं और आठ साल तक क्रिया (अंतर्राष्ट्रीय महिला मानव अधिकार संस्था) की कार्यक्रम निर्देशिका के रूप में 2000 से 2008 तक कार्य किया है। क्रिया की सह संस्थापना करने से पहले उन्होंने दस्तकार क्राफ्त से जुड़े लोगों के जीविका के मुद्दे पर कार्य करनेवाली संस्था) के एक्जेक्यूटिव डायरेक्टर के रूप में कार्य किया था।

सोमा किशोर पारथसारथी – सोमा जेन्डर, विकास व जीविका के मुद्दे पर पिछले 25 सालों से काम करती रही हैं। जेंडर, संस्थागत विकास व बदलाव के मुद्दों पर इन्हें एक सलाहकार और योजनाकर्त्ता के रूप में पारंगत हासिल है व अनेक संस्थाओं के साथ इन मुद्दों पर काम कर रही हैं। सन् 2000 से 2006 तक निरंतर से एक सलाहकार के रूप में जुड़ी जिसके परिणामस्वरूप शोध कार्यक्रम, स्वयं सहायता समूह पर अनेक प्रकाशन व शिक्षा और सशक्तिकरण पर एक मजबूत पैरवी की शुरूआत हुई। सोमा संस्थाओं के साथ जुड़कर महिलाओं के जमीन के अधिकर और जेंडर के मुद्दे पर चिंतन करने और जांचने की प्रक्रिया का संचालन कर रही हैं। अभी मुंबई के आई आई टी से पीएचडी के लिए जेंडर संबंध व सार्वजनिक संपत्ति संसाधन पर शोध कार्य की शुरूआत की है।

मार्टिन मेकवान – गुजरात में स्थित समूह, नवसर्जन ट्रस्ट के संस्थापक हैं जो 2000 दलितों के साथ छुआछूत के मुद्दों पर कार्य कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य अतिथि शिक्षकगण भी होंगे जो इन मुद्दों पर कार्य करते हैं और इन मुद्दों पर विशेष कार्य अनुभव रखते हैं।

क्रिया CREA

7, मथुरा रोड़, दूसरी मंजिल, जंगपुरा बी
नई दिल्ली – 110 014, भारत
फोन नं. 011 24377707, 24378700 फैक्सः 011 24377708
ई–मेलः crea@vsnl.net वेबसाईटः http://www.creaworld.org

क्रिया CREA

अधिकार, विकास एवं संघर्ष – एक अध्ययन

22–26 नवंबर, 2010